हरिवंशराय बच्चन के साहित्य में समाजिक चेतना

(Harivansh Rai Bachchan ke Sahitya Main samajik Chetna)

श्री रवीन्द्र कुमार

असि0प्रो हिन्दी

उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड

Email-ravipmarothi@gmail.com

सारांश-

सामाजिक चेतना समाज और देश की परिस्थितियों को समझनें और उनका मूल्यांकन करने वाली शक्ति का नाम है । सामाजिक चेतना के कारण ही हम देश की परिस्थितियों को समझते है, उन परिस्थितियों पर विचार करते है ।चेतना एक ऐसी अनुभूति है जिसमें व्यक्ति और उसकी क्रियाशलता का अध्ययन किया जाता है । समाज में निवास कर रहे व्यक्तियों की मानसिक प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ही समाजिक चेतना का विकास होता है । हरिवंश राय बच्चन ने साहित्य में अनुवाद,आत्मकथा, निबन्ध, यात्रावृत, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, वार्ता लेखन, व रिपोतार्ज पर अपनी कलम चलायी थी । साधारण पाठक एवं श्रोताओं के लिए बच्चन एक कवि ही है । उनके साहित्य में आवश्यकता पर बल, नारी-धारणा, धर्म निरपेक्षता, हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल, देश-प्रेम, स्वदेशी

भावना ,शोषण का विरोध, गौरवपूर्ण इतिहास, रूढ़ियों का विरोध आदि विषयों पर प्रकाश डाला है ।

धार्मिक कट्टरता रूढ़िवाद, अंधविश्वास, और साम्प्रदायिकता,असहिष्णुता, आदि विषय जिन पर हिन्दी कविता में आदि आदि काल से ही व्यंग लिखा जाता रहा है । नव्य छायावादियों में भी बच्चन ने भी इन विषयों पर लेखनी चलाई तथा ये इनके प्रिय विषय रहें है । व्यक्ति जब सामाजिकता के आदर्श रंग में रंग जाता है । तो उसमें स्वदेश प्रेम का रंग चढ़ जाता है । सच्चे देश प्रेम में ईर्ष्या वैमनस्य राग द्वैष सब से मुक्त होकर व्यक्ति संमार्ग का पथिक बन जाता है । देश की राष्ट्रीय जागृति एकता और अखण्डता के लिए कवि समाज में आपसी मेलजोज एकता पर जोर दिया है ।

मूल शब्द-

स्वच्छन्दतावाद,भंगिमा ,अभिव्यक्ति,धर्म निरपेक्षता, साम्प्रदायिकता, दाय-उपाय, टोटके-टामन आदि ।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है । समाज में रहकर ही साहित्यकार अपने अनुभवों को संकलित करता है । उसको साहित्य के द्वारा अभिव्यक्त करता है । साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब कहा जा सकता है । समाज में समाजिक,आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तन होते रहते है । उसका प्रभाव तत्कालीन

साहित्य पर पड़ता है । साहित्य, समाज, और व्यक्ति का परस्पर संबंध होता है । साहित्य मानव समाज के तत्कालीन वर्णन की एक सशक्त कला है । साहित्य मनुष्य जाति के सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है । साहित्य जहां एक ओर समाज की गतिविधियों से प्रभावित रहता है, दूसरी ओर समाज को नई प्रेरणा, नये विचार और नये आदर्श प्रदान करता है। एक साहित्यकार जन चेतना और सामाजिक चेतना द्वारा राजनीति को प्रभावित करता है । साहित्यकार तत्कालीन परिस्थितियों की अनुभूति ग्रहण कर राजनीति को समाज से जोड़कर चेतना युक्त रखता है ।

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत स्वच्छन्दतावाद की नयी भंगिमा व रूप की अभिव्यक्ति की गई है । इस युग के प्रर्वतक कवि हरिवंश राय बच्चन के साहित्य से मानी जाती है । बच्चन जी की स्वच्छन्दतावादी कवियों में सर्वश्रेष्ठ स्थान माना जाता है । हरिवंश राय बच्चन ने साहित्य में अनुवाद,आत्मकथा, निबन्ध, यात्रावृत, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, वार्ता लेखन, व रिपोतार्ज पर अपनी कलम चलायी थी । साधारण पाठक एवं श्रोताओं के लिए बच्चन एक कवि ही है । डॉ0स्नेह लता के अनुसार-''व्यक्ति का सबसे बड़ा आकर्षण केन्द्र स्वयं व्यक्ति ही है । साहित्य में व्यक्ति का ही अध्ययन होता है । साहित्य और व्यक्ति के जीवन में बिम्ब प्रतिबिम्ब का भाव का संबंध है । व्यक्ति के जीवन की प्रेरणा ही साहित्य की प्रेरणा होती है । व्यक्ति के जीवन का जटिल इतिहास ही साहित्य का मुख्य विषय होता है । प्रत्येक मनुष्य में आत्माभिव्यक्ति की प्रवृति विद्यमान होती है,

अर्थात वह अपने भावों को प्रकाशित किये बिना नहीं रह सकता । यहि आत्माभिव्यक्ति उसकी समाजिकता का मूल है ।''1

जिस प्रकार महासागर धरती को अपने आगोश में लेकर उसकी समस्त संरचनाओं का संसार के मिलवाता है । ठीक उसी प्रकार हरिवंश राय बच्चन का साहित्य मानव संतान और उसके समाज में व्याप्त समस्त प्रकार की विड़म्बनाओं, आड़म्बरों और समस्याओं की पोल खोलता है । बच्चन जी ने अपनी रचना 'क्या भूलुं क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक, में जो आत्मकथा प्रस्तुत की है, वो उनके जीवन के चार अध्याय है । उन्होनें आत्मकथा व गद्य साहित्य में समाज व सामाजिक चेतना पर जो लकीर खीचीं है वो जागरूकता और चेतना, मनुष्य और मानव के लिए आधार स्तम्भ बनकर सामने आया है । उनके साहित्य में आवश्यकता पर बल, नारी-धारणा, धर्म निरपेक्षता, हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल, देश-प्रेम, स्वदेशी भावना ,शोषण का विरोध, गौरवपूर्ण इतिहास, रूढ़ियों का विरोध आदि विषयों पर प्रकाश डाला है । पुष्पा भारती के अनुसार-''गद्य यदि कवियों की कसौटी है तो निःसंदेह बच्चन अपने गद्य में भी कवि होने का प्रमाण देती है । उनके साहित्य का मूल्यांकन उनके गद्य की उपेक्षा करके नहीं किया जा सकता है ।''2

साहित्यकार जिस समाज में जन्म लेता है उसी समाज की प्रतिनिधित्व करता है । जिस सामाजिक वातावरण में उसका जन्म होता है । उसी समाज में उसका सम्पूर्ण विकास होता है । डॉ0 नरेन्द्र देव वर्मा के अनुसार-''बच्चन का काव्य अतृप्ति के बोध और उसकी मनोमयी का काव्य है । असल में बच्चन जिस युग

और समाज में पैदा होते है वो जर्जर अनैतिकता और अंधविश्वासों से ग्रस्त सामाजिकता का युग है । यह एक ऐसा यंुग है जहां अतृप्ति की बात करना गुनाह समझा जाता है, और अचेतन की उपत्यकाओं में विचरण करने के कार्य को नैतिक स्खलने की संज्ञा दी जाती है । बच्चन के आरम्भिक काव्य ने रूढ़िग्रस्त समाज के एक कौने को झकझोर दिया था और वो कौना बच्चन के उद्गारों को अनैतिक और अश्लील कहने से भी नहीं चूका था ।''3 धार्मिक कट्टरता रूढ़िवाद, अंधविश्वास, और साम्प्रदायिकता,असहिष्णुता, आदि विषय जिन पर हिन्दी कविता में आदि आदि काल से ही व्यंग लिखा जाता रहा है । नव्य छायावादियों में भी बच्चन ने भी इन विषयों पर लेखनी चलाई तथा ये इनके प्रिय विषय रहें है । अनिल राकेश के अनुसार-''बच्चन के सामाजिक व्यंग,सामाजिक रूढ़ियों या दकिया नूसी मान्यताओं के विरूद्व न होकर प्राचीन मूल्यों के विघटन से उत्पन्न स्थितियों पर केन्द्रित है ।वह अनुभव करते है कि बदलाव तेजी से आ रहा है और यह भी जानते है कि इस अतिक्षण और दारूण यथार्थ का सामना करना ही होगा ।''4 हरिवंश राय बच्चन का युग संदेह का युग था । उनके परिवार के सदस्य सामाजिक और राजनैतिक क्रियाकलापों को संदेह की दृष्टि से देखते है । धार्मिक कट्टरता रूढ़िवाद, अंधविश्वास, और साम्प्रदायिकता,असहिष्णुता, आदि विषयों पर हिन्दी साहित्य में कुछ न कुछ लिखा जाता रहा है । हरिवंश राय ने धार्मिक रूढ़ियों और पाखण्डों पर व्यंग कर तीखे प्रहार किये । इनका विरोध उन्होनें बचपन से ही किया था । उन्होंनें अपने चाचा मोहन के बारे में लिखा है-''विचारों से वे रूढ़िवादी, रूढ़ियों के पुजारी नहीं, रूढ़ियों के गुलाम थे । पुरानी रीति-नीति, रस्म

रिवाज, रहन सहन में किसी तरह का परिवर्तन उन्हें सहन नहीं था । आगे चलकर उनकी मेरी कई टक्करें हुई ।''5 इससे स्पष्ट है कि बच्चन जी ने रूढ़ियों और धार्मिक पाखंडों ,आडम्बरों का विरोध कर इनकों समाज से इन्हें हटाने हेतु प्रेरणा प्रदान की ।

बच्चन ने लिखा है कि -''हमारे परिवार में प्रथा थी कि लड़कों का पहला बाल विध्यांचल की देवी के समक्ष उतरवाया जाता था । एक बकरे की बलि दी जाती थी ।''6 हरिवंश राय ने समाज की इन घृणित प्रथाओं और धर्माड़म्बरों का विरोध किया तथा समाज में जागृति का अलख जगाया । उन्होनें इन अंधविश्वासों और पाखंडों के बारे में लिखा है-''पुरानी लीकों को पीटने में मेरा विश्वास न रह गया था ।''7 बच्चन के समय समाज में मृत्युभोज की प्रथा प्रचलित थी । जिनके बारे में उन्होनें लिखा है कि-''पुराणपंथी पीढ़ी दर पीढ़ी से चले आये रीति-रिवाजों के शिकंचों में जकड़े निर्धन हिन्दू के घर मौत उसकी तबाही की भविष्यवाणी करती हुई आती है ।''8 बच्चन ने अपने परिवार में प्रचलित अंधविश्वासों व पाखण्डों का वर्णन अपने साहित्य के अन्तर्गत किया है -''मेरे होने और जीने के लिए मेरी माता ने और भी बहुत से दाय-उपाय, टोटके-टामन आदि किये ।''9 साथ ही ''अपने घर में किसी की ईमारी बीमारी में वें वैद्य हकीम की दवा के साथ , खर-खोदवा, आझाई, झाड़-फूंक, सब एक साथ करवाती थी ।''10

बच्चन द्वारा साहित्य लेखन से पहले ही धर्म के प्रति अविश्वास प्रदर्शित किया गया था । उनके द्वारा सनातन धर्म में व्याप्त रूढ़ियों, मुर्खताओं और विसंगतियों पर अपने शब्दों के द्वारा व्यंग की धार तेज की है । उन्होनें धर्म के बारे में लिखा है

-''मैने निर्ममता से सोचा, तथाकथित धर्म प्रेम की शर्त नहीं पर प्रेम-परिणति में एक धर्म बाधा हो तो उसे छोड़ दूसरे को अपनाने में कोई हर्ज नहीं । तथाकथित धर्मों को मैं क्या महत्व देता था , यह बहुत साफ -साफ और और बहुत बार मेरे पंक्तियों में व्यक्त हो चुका था-'धर्म ग्रन्थ सब जला चुकी है जिसके अन्तर ज्वाला 'आदि । मेरा मानव धर्म अग्निपरीक्षा पर था । मैं एक धर्म के प्रति अपनापन और दूसरे के प्रति परायापन कैसे बरत सकता था । या तो दोनों को मैं समान महत्व देता या दोनों का समान नगण्य समझता था । सच कहूं तो अपने प्रेम धर्म के समक्ष मैनें दोनों को महत्वहीन समझा ।''11

हरिवंश राय बच्चन ने हिन्दू धर्म की अंध मान्यताओं का खण्डन किया है । उनके शब्दों में '' हम हिन्दू पूर्वजन्म और पश्चात जन्म को संस्कारतः स्वीकार कर लेते है । सबूत कभी -कभार हम पाते है तो किसी-किसी की पूर्वजन्मों की स्मृतियों में ज्यादा शत-प्रतिशत सत्य नहीं होती और शत-प्रतिशत सिद्ध भी नहीं होती ।''12

मानव विचारों और भावनाओं का जन्मदाता है । समाज में व्याप्त सभी प्रकार की समस्याओं से वह प्रभावित होता है । व्यक्ति को प्राप्त सामाजिक वातावरण से उसका चरित्र बनता और बिगड़ता दोनों है । साहित्यकार जिस समाज में पैदा होता है वह उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है । बच्चन के साहित्य की मूलधारा उनके व्यक्तिगत जीवन के उतार चढ़ाव से प्रेरित है ,उन्होनें सामाजिक दायित्वों को युगानुसार स्वर दिया है ।

भारतीय समाज में चेतना और जागृति लानें के लिए दलितों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा है कि-''मैं सोचने लगा हूं कि अछूतों के साथ या उनके हाथ

का खाना -पीना अथवा उनके लिए मंदिरों का द्वार खोल देना रूमानी औपचारिकताएं अथवा प्रदर्शन है । समाज में उनको अपना यथोचित स्थान तब मिलेगा जब उनमें शिक्षा का व्यापक प्रचार हो और उनका आर्थिक स्तर उपर उठे । साथ ही जाति की श्रृंखला को उपर से नीचे तक टूटना या ढिला होना पड़ेगा । एक छोटा सा कदम इसके लिए उठाया जा सकता है कि लोग अपने नाम के पीछे जाति का संकेत करना बंद कर दें ।''13 नारी चेतना बच्चन जी की राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण भाग है । इनके समय में समाज में नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी । बच्चन के अनुसार-''उन दिनों की प्रचलित कुप्रथाओं के अनुसार हिन्दू परिवार में विधवा की जैसी उपेक्षा दुर्दशा की जाती थी ।''14 उपरोक्त वाक्यों से पता चलता है कि उस समय हिन्दू धर्म में विधवाओं का जीवन नरकीय था उसे हमेशा ही समाज में उपेक्षा, घृणा, प्रताड़ना का शिकार होना पड़ता था । समाज में लड़के और लड़की के मध्य भेदभाव था, लड़को को हर कार्य में प्राथमिकता दी जाती थी । इसका पता बच्चन के एक लेख से चलता है-''दादी ने वहीं पर मानता मानी कि अगर साल के अन्दर उनको लड़का होगा तो वो भुईयां रानी की सात परिक्रमा करेंगी,उनको सात चुनरी चढ़ाएंगी ।''15 संस्कृति एक देश विशेष की उपज होती है । उसका संबध देश के भौतिक वातावरण या उसमें पालित पोषित विचारों में होता है । सत्यकेतु विद्यालंकार का अवधारणा है-''चिंतन द्वारा अपने जीवन को सुन्दर और कल्याणम बनाने के लिए मनुष्य जो प्रयत्न करता है उसका परिणाम संस्कृति के रूप में प्राप्त होता है ।''16 बच्चन युग में परिस्थितियां हिन्दू-मुस्लिम एकता के खिलाफ थी । विदेशी सत्ता इन दोनों सम्प्रदायों को लड़ाकर अपने लक्ष्यपूर्ति में

शामिल थी । उन्होंने लिखा है -''पाक्स्तिान के लिए मुस्लिम लीग का आन्दोलन जोर पकड़ता जाता था । शहर में आये दिन हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते थे। ''17

व्यक्ति जब सामाजिकता के आदर्श रंग में रंग जाता है । तो उसमें स्वदेश प्रेम का रंग चढ़ जाता है । सच्चे देश प्रेम में ईर्ष्या वैमनस्य राग द्वैष सब से मुक्त होकर व्यक्ति संमार्ग का पथिक बन जाता है । देश की राष्ट्रीय जागृति एकता और अखण्डता के लिए कवि समाज में आपसी मेलजोज एकता पर जोर दिया है । बच्चन युग में परिवार से लेकर समाज में अंधविश्वास, पाखण्ड, आडम्बरता का बोल बाला था । बच्चन ने तत्कालीन समाज की परिस्थितियों को समझते हुए अपने साहित्य के द्वारा जोर -सोर से समाजिक चेतना जागृत करने का कार्य किया । उनको लेगने वाल सभी अनुचित बातों को खण्डन कर समाज को एक नई विचारधारा से जोड़ने का प्रयास किया था ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-डॉ0 स्नेह लता वर्मा,''आत्मकथाकार बच्चन'', पृ0स0 04.

2-पुष्पा भारती,''हरिवंश राय बच्चन की साहित्य साधना'',पृ0स0114.

3-डॉ0नरेन्द्र देव वर्मा,''प्रगतीकार बच्चन और अंचल'',पृ0स0 37.

4-अनिल राकेशी,''छायावादोत्तर कविता में समाज समीक्षा'', पृ0स0 273.

5-हरिवंश राय बच्चन,''क्या भुलूं क्या याद करूं'',पृ0स0 25.

6-वहीं, पृ0स0 62.

7-वहीं.

8-वहीं,पृ0स0 70.

9-वही, पृ0स0 95.

10-वहीं,पृ0स0 96.

11-हरिवंश राय बच्चन,''नीड़ का निमार्ण फिर'', पृ0स0 153-154.

12-हरिवंश राय बच्चन,''दशद्वार से सोपान'',पृ0स0 410.

13-हरिवंश राय बच्चन,''क्या भुलूं क्या याद करूं'',पृ0स0 98.

14-वही,पृ0स0 34.

15-वही,पृ0स0 38.

16-सत्यकेतु विद्यालंकार,''भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास'',पृ0स0 19.

17-हरिवंश राय बच्चन,''नीड़ का निमार्ण फिर'', पृ0स0 237.